Social development

Q. Explain the different stages of social development of children.

बच्चों में होनेवाले सामाजिक विकास के विभिन्न स्तरों का वर्णन करें।

Ans— सामाजिक विकास वह प्रक्रिया है जो बालक के जीवन में जन्म से मृत्युपर्यन्त किसी-न-किसी रूप में चलती रहती है। सामाजिक विकास की गति प्रारंभिक अवस्थाओं में तीव्र होती है। विभिन्न अवस्थाओं में होने वाले सामाजिक विकास का संक्षेप में इस प्रकार से वर्णन किया गया है—

(1) Social development in Infancy (शैशवावस्था में सामाजिक विकास)

शैशवावस्था का प्रसार क्षेत्र जन्म से दो वर्ष होता है जिस समय शिशु इस भौतिक संसार में जन्म लेता है, वह इस समय न तो सामाजिक होता है, और न ही असामाजिक। अर्थात् बच्चा पूर्णतया समाज निरपेक्ष जीव होता है। जन्म से दो माह के अन्त तक शिशु केवल संवेदनात्मक एवं शारीरिक (sensory and physical) activities करता है। आयु वृद्धि के साथ-साथ बालक सामाजिक प्रतिक्रियाएँ करने लगता है। तीन माह की अवस्था का नवजात शिशु अपनी माँ के अतिरिक्त परिवार के अन्य लोगों के प्रति अनुक्रिया करने लगता है। रोने, मुस्कुराने, सिर घुमाने की क्रियाओं के द्वारा शिशु दूसरे लोगों का ध्यान आकर्षित करने लगता है। 5 माह के शिशु द्वारा आवाज के प्रति चौकन्ना होना, अकेले रहने पर रोना, एवं अन्य वस्तुओं पर एकटक देखना, सामाजिक अनुक्रिया के प्रतीक होती है। अध्ययनों से यह स्पष्ट किया गया है कि तीन सप्ताह में केवल 20% शिशुओं में मुस्कुराने की क्रिया पायी जाती है जबकि 5 माह में 98% शिशुओं में मुस्कुराने की क्रिया पायी जाती है। इस आयु का शिशु दूसरे व्यक्तियों के बुलाने पर शांत हो जाता है, और भीड़-भाड़ होने पर बेचैनी का अनुभव करता है। 4-5 महीने का शिशु अन्य बालकों को देखकर मुस्कुराता है। 10 माह का शिशु सामाजिक

[illegible]

[illegible] co-operation, jealousy (ईर्ष्या), heat (घृणा), [illegible] आदि की भावनाएं विकसित होने लगती हैं। [illegible]

2. Social development in Early Childhood (पूर्व बाल्यावस्था में सामाजिक विकास) :- बाल्यावस्था सामाजिक विकास का मुख्य आधार होती है। इस अवस्था का प्रसार 3 से 6 वर्ष तक का होता है। 3 से 6 वर्ष तक [illegible] की ऐसी अवस्था होती है जब शिशु बालक के रूप में अपने परिवार से बाहर निकलता है अर्थात उसका सम्पर्क घर-पड़ोस एवं विद्यालय के मित्रों एवं सहपाठियों से होता है। शैशवावस्था का आत्मकेंद्रित शिशु अब अपने व्यवहार एवं [illegible] के द्वारा दूसरों का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित करने लगता है।

3 से 6 वर्ष की अवस्था में सामाजिक विकास की गति बड़ी तीव्र होती है। बालक का समाज के प्रति दृष्टिकोण विस्तृत हो जाता है, Murphy ने अपने अध्ययनों से यह स्पष्ट किया है कि इस आयु के बालकों में सामूहिक जीवन की प्रबल इच्छा होती है। मित्रों के प्रति Symathy की भावना अधिक होती है। Jersield (जरसील्ड) महोदय ने स्पष्ट किया कि जिन बालकों को इस अवस्था में खेलने के लिए पर्याप्त अवसर (उपलब्ध) नहीं हो पाते उनमें Aggressive tendency (आक्रामक प्रवृत्ति) का पूर्णतया विकास हो जाता है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार इस अवस्था के बालकों में निम्नलिखित सामाजिक विशेषताएं दिखाई देती हैं। जैसे —

(1) Sympathy (सहानुभूति)
(2) Imitaation (अनुकरण)
(III) Play (खेल)
(IV) Competition (प्रतियोगिता)
(V) Co-operativeness (सहकारिता)
(VI) Negativeness (नकारात्मकता)
(VII) Teasing (चिढ़ाना या तंग करना)
(VIII) Dominance (प्रभुत्व)
(IX) Lying (झूठ बोलना)
(X) Stealing (चोरी करना)
(XI) Quarrel (कलह)
(XII) Aggression (आक्रामकता)।

(3) Social development in Late childhood (उत्तर बाल्यावस्था में सामाजिक विकास)

सामाजिक विकास की इस अवस्था का प्रसार क्षेत्र 7 से 12 वर्ष होता है। यह अवस्था मुख्य रूप से प्रारंभिक विद्यालय की अवस्था (elementary school period) होती है। उत्तर बाल्यावस्था को सामुदायिक अवस्था भी माना जाता है क्योंकि 'समूह शक्ति' इस आयु की मुख्य विशेषता होती है। विद्यालय में बालक के नये मित्र बनते हैं, उनके साथ उसे समायोजन करना होता है। बालक अपने मित्र-मंडली पर इतना आश्रित

हो जाता है कि उसके खेल संबंधी योजनाएँ भी उसके मित्र ही निर्धारित करते हैं। खेलों में पूर्ण सहभागिता के साथ-साथ बालक अपने विचारों की पूर्ण अभिव्यक्ति करने लगता है, जिससे उसके सामाजिक प्रतिक्रियाओं का क्षेत्र व्यापक हो जाता है। विद्यालय में एक-दूसरे के साथ उठना-बैठना, खेलना-कूदना, पढ़ना-लिखना आदि क्रियाओं से बालक को सामाजिक विकास का पर्याप्त अवसर मिलता है। समूह की मान्यता बालक के लिए घर एवं विद्यालय की मान्यताओं से भी महत्वपूर्ण हो जाती है। समूह निष्ठा के कारण बालक कभी-कभी झूठ भी बोलने लगता है। तथा स्कूल में अध्यापक के दबाव के कारण विरोध भी करने लगता है। इस उम्र के बच्चों को दूसरे लोगों के साथ सम्पर्क बनाये रखने का पर्याप्त अवसर मिलता रहता है। अतः उसकी मित्रता स्थायी रूप ग्रहण कर लेती है। जो बिना किसी छल-कपट, बनावट एवं भेदभाव पर आधारित होने के कारण जीवनपर्यन्त अटूट बनी रहती है।

वास्तव में बालक में पूर्वबाल्यावस्था में जिन सामाजिक गुणों का विकास हुआ रहता है, उत्तर बाल्यावस्था में अधिकांशतः उन्हीं गुणों का विकास होता है। उत्तर बाल्यावस्था में यौन चेतना के विकास के साथ ही लड़के एवं लड़कियों में यौन विरोध की भावना अधिक प्रबल होती है। अतः बालक एवं बालिकाएँ अलग-अलग समूह का निर्माण करते हैं। बालक एवं बालिकाओं में विभिन्न रुचियों के विकास के साथ ही sexual विभेद भी पाया जाता है। उत्तर बाल्यावस्था के बालकों में सामाजिक विकास की प्रमुख विशेषता leadership (नेतृत्व) होता है। प्रारंभ में बालक अपनी शक्ति (power) एवं आक्रामक प्रवृत्ति के द्वारा अन्य बालकों पर प्रभुत्व स्थापित करता है। किन्तु आयु वृद्धि के साथ बालक में त्याग, आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास, तथा आत्म संयम के गुणों का भी विकास हो जाता है। नेतृत्व की प्रवृत्ति अन्तर्मुखी बालकों / बालिकाओं की अपेक्षा बहिर्मुखी बालक व बालिकाओं में अधिक पायी जाती है। मनोवैज्ञानिक अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि उत्तर बाल्यावस्था के बालकों में मुख्य रूप से निम्न विशेषताएँ प्रमुखता से दृष्टिगत होती हैं। यथा —

(1) Group loyalty (समूह भक्ति)।

(II)
Friendship (मित्रता)

(III) Sex consciousness (यौन चेतना)

(IV) Sex antagonism (यौन विरोध)

(V) (सामूहिकता) Gregariousness

(VI) Cooperation (सहयोग)

(VII) Leadership (नेतृत्व)

(VIII) Sympathy (सहानुभूति)

(IX) Rivalry and competition (स्पर्धा एवं प्रतियोगिता)

(X) Self actulization (आत्मविश्वास)

(XI) Self dependent (आत्मनिर्भरता)

(XII) Felling of Play (खेल भावना)

(XIII) Felling of security (सुरक्षा की भावना)

(XIV) Tolerance (सहिष्णुता)

(4) <u>Social development Adolescence (किशोरावस्था में सामाजिक विकास)</u>

सामाजिक विकास की इस अवस्था का प्रसार क्षेत्र 12 से 18 वर्ष तक है। यह अवस्था मुख्य रूप से आरंभिक किशोरावस्था की अवस्था होती किशोरावस्था का प्रसार क्षेत्र 13 वर्ष से 21 वर्ष तक होता है। किशोरावस्था सामाजिक विकास की चरम अवस्था होती है। वीर कुप्पू स्वामी के अनुसार, "किशोरावस्था यौवनावस्था एवं वयस्कावस्था के बीच संक्रमण का काल (समय) होती है। जिसमें परिवर्तित शारीरिक अवस्था के अनुरूप इक नवीन सामाजिक, संवेगात्मक, समायोजन संभव हो पाता है। इस अवस्था में बालक को विपरीत लिंग के व्यक्तियों के साथ adjustment संभव हो पाता है। इस अवस्था में बालक को विपरीत के कारण लोगों के प्रतिमानों के विरोध का भाव इस अवस्था में बालक में भरा रहता है। जिसके कारण बालक के पारिवारिक जीवन में अनेकों समस्याएँ उत्पन्न होती रहती हैं।

बच्चों के मित्रों की सबसे अधिक संख्या किशोरावस्था में होती है। समाज के रीतियों रिवाजों, मान्यताओं एवं विधानों से बालक अच्छी तरह परिचित हो जाता है और उनके प्रति

Date ___/___/______ Page No.: ______

बच्चों में निष्ठा भाव विकसित हो जाता है। समाज के आदर्शों एवं व्यक्तियों के प्रति बालक के भीतर नवीन अभिवृत्तियाँ, रुचियों, मूल्यों एवं धारणाओं का निर्माण हो जाता है। बालक में वीर-पूजा, नेतृत्व, आत्म-अभिव्यक्ति व आत्म प्रदर्शन की प्रवृत्ति चरम पर होती है। जिसके कारण मनोवैज्ञानिकों ने किशोरावस्था को Teen age की संज्ञा दी है। इस अवस्था में बालक एवं बालिकाओं में निम्नलिखित विशेषताएँ मुख्य रूप से दिखायी पड़ती हैं। यथा —

(I) Social consciousness (सामाजिक चेतना)
(II) Self expression (आत्म अभिव्यक्ति)
(III) Attraction of sex antogonism (विपरीत यौन के प्रति आकर्षण)
(IV) social maturiety (सामाजिक प्रौढ़ता)
(V) Felling of worel brotherhood (विश्व बन्धुत्व की भावना)
(VI) Loneliness (एकाकीपन)
(VII) Emotional unstability (संवेगात्मक अस्थिरता)
(VIII) Decision change (निर्णय परिवर्तन)
(IX) Accountbility (दायित्वबोध)
(X) Anxiety and depression (दुश्चिन्ता एवं उदासी)

अतः यह कहा जा सकता है किशोरावस्था में व्यवहार की स्वतंत्रता नहीं रहती है और इसमें यह चिन्ता बनी रहती है कि उसके द्वारा किये गये व्यवहार के प्रति दूसरे लोग क्या सोचते हैं। अपनी कमी व दुर्बलता को छिपाने व प्रतिशोध की भावना बालक में अधिक होती है। काम भावना की तीव्रता के कारण किशोरों एवं किशोरियों में विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण की प्रबलता होती है। आत्मसम्मान की प्राप्ति के लिए बालक सामाजिक कार्यों में रुचि लेने लगता है। किशोर मन भावुक होने के कारण अपने गलत कार्यों पर प्रायश्चित भी करता है। इस अवस्था के किशोरों में शेखीबाजी, जिद्दीपन तथा किशोरियों में शर्मीलापन की विशेषता पायी जाती है। उनकी समाज के प्रति अनुरूपता आत्म स्थापना, सामाजिकता, अर्न्तदृष्टि, बड़ों के प्रति विरोधाभाव एवं पूर्वाग्रह जैसी विशेषताएँ भी किशोरावस्था के सामाजिक विकास में परिलक्षित होती हैं।